بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

जादू की हक़ीक़त और इसका शरई इलाज

कुरआन व हदीस की रोशनी में



-: तरतीब :-

अबू अहमद अब्दुल वकील मुहम्मदी मदनी

-: नासिर :-

ज़िलई जमीयत अहलेहदीस नागौर

-: सदर दफ़्तर :-

मदरसा अरेबिया सल्फ़िया हिदायतुल उलूम

चमनपुरा, मकराना- 341505 (राज.)

फोन: 01588-244556

जादू की हक़ीक़त और इसका शरई इलाज

(क़ुरआन व हदीस की रोशनी में)

जादू एक ख़बीस अमल है जो किसी भी इंसान पर उसके दुश्मनों की तरफ़ से किया जाता है। जादू का असर इंसान पर जरूर होता है, अल्लाह की मर्ज़ी के तहत इस हक़ीक़त से इन्कार नहीं किया जा सकता। चुनान्चे खुद हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किया गया था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी इसके असरात जाहिर हुए थे ।

जादू नज़रे बद और आसेब के असरात इंसानी ज़िन्दगी के लिए घातक और जानलेवा साबित होते है । अलहम्दुलिल्लाह शरीअते मुतहरा में इसका कामिल हल और फ़ैसलाकुन इलाज बतलाया गया है। वाज़ेह रहे कि 90 फ़िसदी अफ़राद सिर्फ़ जादू हो जाने के शक व शुबह की बुनियाद और सही इल्म ना होने की वजह से शबोरोज़ दिमाग़ी परेशानी में मुबतला रहते है और खुद अपने ही हाथों अपनी दुनिया और आख़िरत ख़राब कर रहे हैं और हमारी माँ, बहनें सबसे ज्यादा इस मर्ज़ में गिरफ़्तार हैं।

आज हज़ारों मुस्लिम मर्द और बेशुमार मुस्लिम औरतें जादू नज़रे बद और आसेब की इस बला से छुटकारा पाने की गरज़ से अल्लाह को छोड़कर ग़ैरूल्लाह के ''आस्तानों'', ''मज़ारों'' और ''खानक़ाहो'' की खाक छान रहे हैं । अफ़सोस कि जिस क़ौम को बेशुमार अमराज और हम अकसाम के जादू से हिफ़ाज़त के लिए एक अज़ीम नुस्ख़ा क़ुरआन मजीद की शक्ल में अता किया गया है। क़ुरआने करीम और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुँह मोड़ने का नतीजा है कि ज़िल्लत व रूस्वाई के साथ मुसलमानों का पैसा और पाक साफ़ इज्ज़त व आबरू आसेब के बहाने बाबाओं के गर्दशालों, ढोंगी फ़क़ीरों के अड्डों, धोखेबाज़ आलिमों और मुजावरों की खानक़ाहों में लूटा जा रहा है। इसके अलावा सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे भाई बहन नासमझी में अपने कीमती माल व ईमान को अपने ही हाथों से ज़ाया कर रहे हैं।

जादू की तारीख़

जादू की तारीख़ी हैसियत बहुत पुरानी है उम्मते मुहम्मदीया से पहले जितनी भी उम्मतों ने इस दुनिया में जन्म लिया, हर क़ौम में जादू के सीखने और सिखाने का अमल पाया जाता था। चुनान्चे अल्लाह तआला का इर्शाद है ''इसी तरह जो लोग इनसे पहले गुज़रे हैं, इनके पास जो भी रसूल आये। इन्होने कहा ''या तो यह जादूगर है या दीवाना'' (सूर:ज़ारियात-52) इस आयत से मतलब वाज़ेह होता है कि हर उम्मत ने अपने रसूलों को जादूगर होने का ताना दिया और सबसे पहले

रसूल नूह अलैहिस्सलाम है, इनकी कौम ने भी इन्हें जादूगर कहा। (नाऊज बिल्लाह) इतिहासकार इब्ने इशहाक की सराहत के मुताबिक हारूत और मारूत का क़िस्सा नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने से पहले का है।

(फ़त्हुल बारी जिल्द-10 सफा न. 223)

जादू की क़िस्में

जादू की तीन क़िस्में है जिनको हम मुख़्तसर अंदाज में बता रहे है -

1. तख़य्युलाती जादू (नज़रेबद)-- यह जादू की वो क़िस्म है जिसमें जादूगर आदमी के दिल और आँखों को शैतानी कुव्वत से अपने कब्जे में कर लेता है,जिसके ज़रिए वो पहले तो इंसान को बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ ज़दा कर देता है और फिर वो जो चीज़ चाहता है, इंसान को दिखाता है हालांकि वो हक़ीक़त में कुछ नहीं होता। मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा बयान करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया इन जादूगरों ने अर्ज़ किया "ऐ मूसा (अलैहिस्सलाम) चाहे आप लाठी डालें या हम ही डालें" तो मूसा ने फ़रमाया तुम ही डालो। जब उन्होंने डाला तो लोगों की नज़रें बन्द कर दी और उन पर हैबत ग़ालिब कर दी और एक तरह का बड़ा जादू दिखाया । (सूरःआराफ़-114-116)

दूसरी जगह इर्शादे रब्बानी है "अब जो मूसा अलैहिस्सलाम को ख्याल होने लगा कि इनकी रस्सियाँ और लाठियाँ इनके जादू के ज़ौर से दौड़ भाग कर रही हैं।" (सूरः ताहा-66)

मज़कूरा किस्म के जादू का खेल हमारी आंखों के सामने दिन रात बाज़ारों, चौराहों पर देखने को मिलता है। मसलन कोई जादूगर लोगों के सामने काग़ज के टुकड़ों को रूपया बनाकर दिखाता है, हाथ में मिट्टी लेकर शक्कर बनाता है या खाली हाथ घुमाकर अन्दर से लड्डू निकालता है हालांकि हक़ीक़त में यह कुछ भी नहीं होता है।

2. हक़ीक़ी जादू (काला जादू)-- जादू की यह वो क़िस्म है जिसमें जादूगर शैतानी हरकतो और नापाक शिर्किया मंतर तावीज़ के ज़रिए इंसान पर जादू करता है, जिस के नतीजें में आदमी के बदन दिल और अक़्ल पर खतरनाक असर दिखाई देते हैं। आदमी अल्लाह की मर्ज़ी के तहत सख़्त बीमारी में मुबतला होता है, जिससे उसकी मौत भी हो जाती है या इस जादू के ज़रिए अल्लाह की मर्ज़ी के तहत जादूगर इंसान को क़त्ल कर देता है या मियां बीवी में झगड़ा करवा देता है या किसी इंसान की बीवी को जादू के ज़रिए किसी के हवाले कर देता है। चुनान्चे हारूत और मारूत का तज़किरा करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया "फिर लोग इनसे वो सीखते है, जिनसे शोहर और बीवी में जुदाई पैदा कर दें। दरअसल

वो अल्लाह तआला की मर्ज़ी के बग़ैर किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते।
(सूर:बक़रा-102)

दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फ़रमाया "आप कह दीजिये में रब की पनाह में आता हूँ, गांठ लगाकर इनमें फूकनें वालों की बुराई से। "
(सूर:फ़लक़-4)

इस क़िस्म के जादू में जादूगर इंसान के कपड़े जूते चप्पल, नाख़ून बाल वग़ैरह पर जादू करता है अगर यह ना मिले तो कम से कम उसकी माँ के नाम को हासिल करता है। फिर उस पर शिर्किया पलीद मंतर पढता है और ख़बीस शैतानों की मदद से (जिनकी वो अल्लाह के अलावा इबादत करता है) जादू का करतब दिखाता है और उन चीजों को किसी वीरान जगह पर गाढ देता है। इसके साथ ही एक शैतान जो जादूगर का ख़ास ख़ादिम होता है, इंसान के जिस्म से चिपक जाता है और तरह-तरह की तकलीफ़ दिया करता है। जादू का यह तरीक़ा इन्तिहाई ख़तरनाक है, जो बहुत मशहूर और हर जगह पाया जाता है।

3. **हाथ की सफ़ाई**--अगरचे जादू की क़िस्म से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं है, लेकिन हमने जादू की क़िस्मों में इसको इसलिए शुमार किया हैं कि अकसर हाथ की सफ़ाई रखने वाले डाकू, चौराहो, बाजारों और गलियों में किमियाई दवाओं के ज़रिए लोगों की नफ़सयात को अपने कब्जे में रखकर अजब अजब करतब दिखाया करते हैं, जिससे कमज़ोर ईमान वालों का पैसा और ईमान सरे बाज़ार ख़रीद कर निकल जाते हैं।

जादू सीखने और सिखाने के बारे में हुक्म

जादू की पहली दो क़िस्में तख़्युलाती जादू (नज़रे बद) और हक़ीक़ी जादू इनका सीखना और सिखाना कुफ़्र है। लिहाज़ा किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं कि इस क़िस्म का जादू सीखे और सिखाए। इर्शादे रब्बानी है "सुलेमान ने कुफ़्र नहीं किया था बल्कि यह कुफ़्र शैतानों का था वो लोगों को जादू सिखाया करते थे।"
(सूर:बकर 102)

यह आयत इस बात पर दलालत करती है कि जादू सीखना कुफ़्र है। इसी आयत में अल्लाह ने आगे इर्शाद फ़रमाया वे दोनों (हारूत व मारूत) किसी भी सख़्स को उस वक़्त तक (जादू) नहीं सिखाते, जब तक यह न कह दे कि यह तो आज़माईश है तू कुफ़्र ना कर । आयत का यह टुकड़ा इस बात पर दलालत करता है कि जादू सीखना कुफ़्र है।

जादूगर की सज़ा

इस किस्म के जादूगर की सज़ा इस्लाम में क़त्ल बतलायी गयी है बजाला अब्दाह रहमतुल्लाह अलैह कहते हैं कि मैं जुज़ इब्ने मुआविया का मुंशी था। उमर इब्ने ख़त्ताब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मौत से एक साल पहले इनका ख़त हमें मिला जिसमें उन्होंने लिखा था "हर जादूगर को क़त्ल कर दो।" (अबूदाऊद किताबुल बिराज बाब फ़ी अख्जिलजिज्यह मिनलमजूस, जिल्द-2, सफा-513) जुन्दुब अल ख़ैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते है कि जादूगर की सज़ा क़त्ल है। (तबरानी जिल्द-2, सफा-161-दारक़ुत्नी, जिल्द-3, सफा-114) उम्मेहातुल मोमीनीन हफ़सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपनी एक लोंडी को क़त्ल करने का हुक्म दिया जिस ने जादू किया था। (मोअत्ता-628)

वाज़ेह रहे कि जादू की तीसरी क़िस्म हाथ की सफ़ाई का अमल अगरचे कुफ्र तक नहीं पहुंचता, मगर इस किस्म के करतब को भी इनके जुर्म के नोइय्यत के मुताबिक़ क़त्ल किया जायेगा । (अल-ईजाहुलमुबीन-34)

जादूगरों के पास जाने का अंजाम

किसी भी मुसलमान के लिए यह मालूम करने की ख़ातिर कि क्या उस पर जादू हुआ है या नहीं या कोई आरज़ी जादू की तरह लाहक़ है ? किसी जादूगर के पास जाना और उससे इलाज कराना या किसी क़िस्म की गुमशुदा चीज़ की ख़बर लेना शरअन हराम और नाजायज़ है। बाज़ उम्मेहातुल मोमीनीन से रिवायत है नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "जो शख़्स किसी जादूगर, ग़ैब का दावा करने वाले या फ़ाल निकालने वाले के पास जाए और उससे किसी क़िस्म की पूछताछ करे तो उस की चालीस दिन तक नमाज़ कबूल नहीं होगी।" (मुस्लिम किताबुस्सलाम बाब तहरी मुल हाना व इतयानुल कूहान, जिल्द-3, सफा-401, हिस्सा-5)

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "जो किसी जादूगर या ग़ैब का दावा करने वाले या फ़ाल निकालने वाले के पास जाए फिर उसकी तस्दीक़ करे तो उसने शरीअते मुहम्मदीया के साथ कुफ्र किया। "(अहमद, जिल्द-2, सफ़ा-429-बैहकी जिल्द-8, सफा-233)

उपर लिखी गयी दोनों हदीसों से साफ़ वाज़ेह होता है कि ज़िन्दगी में लाहक होने वाली मुसीबत और तकलीफ व परेशानी मसलन जादू वग़ैरह से छुटकारा हासिल करने के लिए नाम निहाद मुसलमान या ग़ैर मुस्लिम जादूगरों और फ़ाल निकालने वाले काफ़िरों के पास जाना और इनकी बातों को तस्लीम और इस पर अमल करना यह सारी बातें एक मुसलमान मर्द और औरत के लिए क़तअन नाजायज़ और हराम हैं। इसके ज़रिए उस की ज़िन्दगी भी इसके अपने ही हाथों तबाह हो जाती है।

बसा अवकात ऐसी जगहों पर मुसलमान की इज़्ज़त व आबरू भी खतरे में पड़ जाती है।

जादू से बचने का तरीक़ा

यहा हम मुसलमान भाइयों और बहनों को जादूगरों और शैतानों के हमलों से अपने आप को बतौर अहतयात महफ़ूज़ रखने का मुअस्सिर तरीक़ा बयान कर रहे हैं -

1. अऊजु बिल्लाहि मिनश्शैतानिरजीम पढना शैतान के शर से अल्लाह की पनाह में आना और इर्शादे रब्बानी है और अगर आप को कोई वसवसा शैतान की तरफ़ से आने लगे तो अल्लाह की पनाह मांग लीजिये । (सूरःआराफ़-200)

दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फ़रमाया "और दुआ करे कि ऐ मेरें परवरदिगार में शैतान के वसवसों से तेरी पनाह चाहता हूँ और ऐ मेरे रब में तेरी पनाह चाहता हूँ कि उस के पास जाऊं।" (सूरः मोमीनुन-97, 98)

मज़कूरा आयत में अल्लाह तआला ने शैतान के शर से बचे रहने की दुआ सिखलाई है। इसका विर्द हमेशा जारी रखें। इसके अलावा मुअव्वज़तैन (सूरः फ़लक़ और सूरः नास) का हमेशा विर्द भी जादू से बचने मे बेहद मुफ़ीद है।

अबू हाबिस जोहनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू हाबिस क्या तुम्हे सबसे बहतरीन दुआ ना बतलाऊ, जिस के ज़रिए से पनाह तलब करने वाले पनाह मांगते हैं? उन्होंने अर्ज़ किया हाँ जरूर बतलायें आपने ये दोनों (कुल अअजू बिरब्बिल फ़लक़ और कुल अऊजू बिरब्बिन्नास) बतलाई। (नसई किताबुल इस्तिआज़ा जिल्द-3 सफा-539)

2. अल्लाह का ख़ौफ़ और इसके अहकाम पर पाबन्दी-इर्शादे रब्बानी है "तुम अगर सब्र करो और तक़्वा इख़्तियार करो तो इनका मक्र व फ़रेब तुम्हें कुछ नुक़सान नहीं देगा।" (सूरःआलेइमरान-102) मज़कूरा आयात से वाज़ेह होता है कि जिस दिल में अल्लाह का खौफ़ और तक़्वा होगा उस पर जादूगरों और शैतानों का मक्र नहीं चलेगा (इंशा अल्लाह)।

3. अल्लाह की ज़ात पर भरोसा और उसी पर यकीन करना-इशर्दि रब्बानी है "और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उसे क़ाफी होगा।" (सूरः तलाक़-3) यानी जो शख़्स अल्लाह पर यकीन करेगा, अल्लाह उसकी हर क़िस्म की मदद के लिए काफ़ी है। अल्लाह की ज़ात पर एतिमाद ना होने की वजह से मुसलमान जादूगरों की पहुँच में आ जाता है।

4. तमाम गुनाहों से इख़लास और सच्चे दिल से तौबा करना। इसलिए कि मुसलमानों पर जो भी मुसीबत आती है वो उनके गुनाहों के सबब होती है।

इर्शादे रब्बानी है "तुम्हे जो कुछ मुसीबतें पहुंचती हैं वो तुम्हारे हाथों के करतूत का बदला है" ।

(सूरः शूरा-30)

5. तोहीद पर क़ायम रहना और बिदआत से बचे रहना और यह अक़ीदा रखना कि कोई भी मुसीबत ख़्वाह वो जादू की शक्ल में ही क्यो ना हो अल्लाह के हुक्म के बग़ैर लाहक़ नहीं हो सकती । चुनान्चे इर्शादे रब्बानी है "दरअस्ल वो अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते" ।

(सूरः बक़रा-102)

6. सुबह सवेरे सात अदद अजवा ख़जूर या मदीना मुनव्वरा के किसी भी ख़जूर का इस्तेमाल इस अक़ीदा से करना कि अल्लाह तआला इस के ज़रिए हर क़िस्म के जादू से बचाएगा। चुनान्चे इशदि नबवी है "जो सुबह सवेरे सात अजवा ख़जूरों को इस्तेमाल करेगा, उस दिन जादू उसको नुक़सान नहीं करेगा" ।

(बुख़ारी किताबुत्तिब बाबुदुआ बिलअजवह लिस्सिहर, जिल्द-3, सफा-340)

दूसरी हदीस में यों इर्शाद है "जो इंसान मदीना के सात अदद ख़जूर सुबह में इस्तमाल करेगा, उस दिन उस पर जादू और ज़हर का असर नहीं होगा ।"
(मुस्लिम किताबुल अशरिबह बाव फ़ज़्ल तमरिल मदीना, जिल्द-3, सफ़ा-28, हिस्सा-5)

इसके अलावा सुबह शाम में बताई गयी मस्नून दुआओं का पाबन्दी से अहतमाम करें। इस बरकत से अल्लाह तआला हर क़िस्म के जादू और मुसीबत से महफ़ूज़ रखेगा (इंशा अल्लाह)।

जादू का इलाज

जादू के इलाज के दो तरीक़े हैं एक शरई दूसरा ग़ैर शरई । जादू के जरिए जादू का इलाज करना यह ग़ैर शरई तरीक़ा है और यह शैतानी अमल है।

जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जादू के इलाज के बारे में पूछा गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह शैतानी अमल है।

(अहमद जिल्द-3 सफा-294)

इसी तरह क़ुरआनी आयतों का बना हुआ या किसी और चीज़ का तावीज़ कड़ा और रवायती अंगुठी के ज़रिए जादू का इलाज भी ग़ैर शरई है । अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि झाड़ फूंक तावीज़ और मियाँ बीवी के बीच मुहब्बत पैदा करने का अमल सब शिर्किया काम हैं । (अबूदाऊद किताबुत्तिब बाब फ़ी तालीकित्तमाइम, जिल्द 3, सफा - 194) ।

अब्दुल्लाह इब्ने उकैम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने गले या बाज़ू में कोई तावीज़ या धागा लटकाता है, तो उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है ।

(तिर्मिज़ी किताबुत्तिव बाब मा जाआ फी कराहिय्यतितालीक, जिल्द -1, सफा - 749)
उक्बा बिन आमिर रज़ियल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अपने गले में तावीज़ लटकाएं अल्लाह तआला उसकी मुराद पूरी ना करे और जो शख्स सीपी लटकाए अल्लाह उसे आराम न दे ।

(मुस्तदरक हाकिम जिल्द - 4 सफा - 216)

जादू के इलाज का शरई तरीक़ा

अब नीचे हम जादू के इलाज का शरई तरीक़ा बयान कर रहे है
1. वो चीज़ें जिन के ज़रिए आदमी पर जादू किया गया है, अगर वो मिल जायें तो उसको निकालकर, इस पर जो गांठ लगायी गयी है या दूसरी क़िस्म की चीज़ें नींबु, नारियल, मिर्च वग़ैरह से इस को बांधा गया हो, उन्हे तोड़ दे और अलग-अलग करने के बाद किसी जगह दफ़न कर दे। यह जादू के तोड़ का मुअस्सिर (असरदार) तरीक़ा है, इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू किये जाने के बाद आपने अल्लाह की तरफ़ से रहनुमाई मिलने के बाद यही तरीक़ा इख़तियार (अपनाया) किया था । (सही बुख़ारी किताबुत्तिब बाबुस्सहर, जिल्द-3, सफा-336)
2. क़ुरआन मजीद की आयतों के जरिए जादू का इलाज---क़ुरआन मजीद की आयतों में बला की तासीर है, इर्शादे रब्बानी है "यह क़ुरआन जो हम नाज़िल कर रहे है, मोमिनों के लिए तो सरासर शिफ़ा और रहमत है, हाँ जालिमों को सिवाय नुक़सान के और कोई ज्यादती नहीं होती ।" (सूरः बनी इस्राईल-82)

अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कई असहाब अरब के एक क़बीले पर पहुँचे उन्होंने (क़बीले वालों ने) उनकी मेहमान नवाज़ी नहीं की और उसी हाल में उन के सरदार को बिच्छु ने काटा । सहाबा के पास दौड़े आए और कहने लगे क्या तुम्हारे पास बिच्छू काटे की कोई दवा या मंतर है ? उन्होंने (सहाबा) कहा क्यों नहीं मगर तुम ने हमारी मेहमान नवाज़ी तक नहीं की, हम तो बिला कीमत इलाज नहीं करेंगें । आखिर उन्होंने (क़बीले वालो ने) कुछ बकरियाँ देनी कबूल की तब एक सहाबी सूरः फ़ातिहा पढना शुरू किया वो सूरः फतिहा पढ़ कर थूक मुंह में इकट्ठा करके थूक देते और आखिर सरदार अच्छा हो गया । इस क़बीले के लोग बकरियाँ ले आए, लेकिन सहाबा को सोच हुआ। उन्होने कहा हम यह बकरियाँ उस वक्त तक नही लेते जब तक कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछ ना ले, फिर उन्होने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हस दिए और फ़रमाया कि तुम को कैसे मालूम हो गया

कि सूरः फ़ातिहा मंतर भी है, बकरियाँ ले लो और मेरा भी हिस्सा लगाओ ।
(बुखारी किताबुत्तिब बाब अररूक्य बिफ़ातिहातिल किताब, जिल्द-3, सफ़ा-327)

अबू इमामा बाहली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि "सूरः बकर की तिलावत करो इसकी तिलावत में बरकत है और इसका छोड़ना हरसत है और जादूगर इस का मुक़ाबला नहीं कर सकते ।"
(किताब फ़ज़ाइलुल कुर्आन मुस्लिम बाब फ़जलसूरतिलबकरह, जिल्द-1 सफ़ा-282)

एक और हदीस में यों वारिद है "जो शख़्स सूरः बक़रा की आख़िरी दो आयते रात को पढ़ लेता है तो यह उसको काफ़ी हो जाती है।" यानी इस अमल की बदौलत अल्लाह तआला उस शख़्स की हिफ़ाजत करता है । (सही बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल बाब फ़ज़्लुल बक़रह, जिल्द-3 सफ़ा-40)

इसके अलावा नीचे कुरआन की उन आयतों को दर्ज कर रहे हैं जिनको लगातार पढ़ने से जादू का असर खत्म हो जायेगा (इंशा अल्लाह)

1. आयतुल कुर्सी (पूरा) सूरः बकरा-255
2. सूरः आराफ -117-122
3. सूरः युनूस-79-82
4. सूरः ताहा-65-70
5. सूरः काफ़िरून
6. सूरः इख़्लास
7. सूरः फलक़
8. सूरः नास

ऊपर दी गई आयतों और सूरतों को कसरत के साथ पढते रहें । इसके अलावा इन आयतों के ज़रिए इलाज का तरीक़ा यह भी है कि सात हरे बेर के पत्ते अच्छी तरह से कूट लें और इन पत्तों को पानी में डालें। उपर लिखी आयतों को पढ़कर पानी में फूंकें, इसके बाद तीन घूंट एक-एक घूंट करके पानी पियें और बाक़ी पानी से ग़ुस्ल करें। इसके ज़रिए पहली मर्तबा के इस्तेमाल ही से इंशा अल्लाह जादू का असर दूर हो जायेगा। अगर फ़ायदा ना हो तो इसी अमल को फ़ायदा होने तक दोहराए। (फ़त्हुल बारी जिल्द-10, सफ़ा-233)

कुरआन मजीद की आयतों से इलाज का दूसरा तरीक़ा

कुरआन मजीद की आयतों के ज़रिए जादू के इलाज का दूसरा तरीक़ा यह कि सूरः फ़ातिहा, आयतल कुर्सी, सूरः बक़र की आख़िरी दो आयतें, सूरः इख़्लास, सूरः नास, सूरः फ़लक़ सभी को तीन तीन मर्तबा पढे इसके बाद अपने ही हाथों पर फूंक मारे और दाहिने हाथ को चेहरे पर फेर लें।

(बुख़ारी किताबुत्तिब बाब अररूक्यू बिफ़ाति हतिल किताब जिल्द-3 सफा-337)

मुखतलिफ़ दुआओं के ज़रिए जादू का इलाज

नीचे हम मुख़तलिफ़ मस्नून दुआएँ पेश कर रहे हैं। कसरत के साथ इनका विर्द जादू के असर को ख़त्म करने में फ़ायदेमंद है (इंशा अल्लाह)।

1. अस् अलुल्ला-हल अज़ीम -मरब्बल अर्शिल अज़ीमि अंय्यशिफ़-य-क (अबू दाऊद किताबुल जनायज़ बाब अद्दुआऊ लिल्मरीज़ इन्दुल इयादह जिल्द-2, सफा-540) इस दुआ को सात मर्तबा पढ़े।

2. मरीज़ के जिस्म के जिस हिस्से में तकलीफ हो अपना हाथ वहा रखे और तीन बार बिस्मिल्लाह पढ़े और सात बार यह दुआ पढ़े -

अऊज़ुबिल्लाहि व कुद-रतिहि मिन शर्रिमा अजिदू हाज़िरू (मुस्लिम किताबुस्सलाम बाब इस्तिबाबू वज्स यदिहि अला मौज़िइल्अलम, जिल्द-3, सफा-380, हिस्सा-5)

3. अल्लाहुम्मा रबन्नासी अज़्हिबिल बअसा अन्तश्शाफ़ी ला शिफ़ाअ इल्ला शिफ़ाउका शिफ़ा ला युगादिर सक़ामना

(बुखारी किताब अल्मरज़ा बाब दुआउल्आइदि लिल्मरीज़ जिल्द-3 सफा-308)

4. अओीज़ु-क बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन कुल्लि शैतानिव हाम्मातिव व मिन कुल्लि ऐनिल्लाम्मातिन । (बुख़ारी अहादोसुलअबिया जिल्द-3 सफा- 315)

5. अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माति शर्रि ममा ख़लक (मुस्लिम किताब अज़्ज़िकर वद्दुआ बाब अद्दअवातु वत्तअव्वुज जिल्द-3सफा-296 हिस्सा-6)

6. अऊज बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन गज़बिही व इक़ाबिही व शर्रि इबादिहि व मिन हमज़ातिश्शयाहिनी व अं यहज़रून

(अबू दाऊद किताबत्तिब बाब कैफ़ररूक्यू जिल्द- 3 सफा- 198)

7. अऊज़ु बि कलिमा तिल्लाहित ताम्मा तिल लति ला युजा विज़ुहुन्ना बररू व वला फ़ाजिरूम मिन शर्रीमा ख-हा-क् व ब-र अ-वज़-रअ व मिन शर्रि मा यन्जिलु मिनस समाई व मिन शर्रि मा याअ रूजू फिहा व मिन शर्रि माज़ र-अ फ़िल अर्ज़ी व मिन शर्रि मायक्षरूज मिन्हा व मिन शर्रि फ़ि-त-निल्लइलि वन्नहारि व शर्रि कुल्ली तारिकिन इल्ला तारिक़ई यत रूकु बिख़इरिन या रहमान (मुस्नद अहमद जिल्द-3 सफा-119)

8. अल्ला हुम्मा रब्बस्मसमांवातिस्सबइ व इब्बलआर्शिलअज़ीमी रब्बना व रब्बा कुल्ली शेईन फ़ालिक़ल्हब्बि वन्नवा व मुन्ज़िलत्तोराति वलइन्जील वल्क़ुर्आनी अऊज़ु बिका मिन शर्रि कुल्ली शैईन अन्ता आख़िज़ुम बिना सियातिही अन्तलअव्वल फ़लैसा क़ब्लका शैऊन व अन्तल आख़िर फ़लैसा बादका शैउन व अन्तज्जाहिर फ़लैसा फौक्क़ा शैऊन व अन्तल्बातिनु फ़लेसा दुनका शेऊना (मुस्लिम किताब अज़्ज़िकरू वददुआऊ बाब अदूदुआऊ इन्दन्नौम जिल्द-3 सफा- 298 हिस्सा- 6)

9. बिस्मिल्लाहि अरक़ीका मिन कुल्ली शैइन युज़ीका व मिन शर्रि कुल्ली नफ़सिन अब ऐनि हासिदिन अल्लाहु यशफ़ीका बिस्मिल्लाहि अरक़ीका (मुस्लिम किताबुस्सलाम बाबुत्तिब जिल्द-3 सफा-270 हिस्सा-5)

10. बिस्मिल्लाहि युबरिका व मिन कुल्लि दाईन यश्यफ़ीका व मिन शर्रि हासिदिन इज़ा हसदा व मिन शर्रि कुल्ली ज़ी ऐनिन। (मुस्लिम किताबुस्सलाम बाबुत्तिब जिल्द-3 सफा-269 हिस्सा-5)

11. बिस्मिल्लाहि अरक़ीका मिन कुल्ली शैइन युज़िका मिन इसदि हासिदिन व मिन कुल्ली ज़ी ऐनिन अल्लाहु यश्फ़ीका। (इब्ने माजा किताकुत्तिब बाब मा यऊज़ु बिहि मिनल हुम्मा जिल्द- 3 सफा- 189)

दवाओं के ज़रिए जादू का इलाज

नीचे हम ऐसी फितरी दवाओं को पेश कर रहे हैं जो अलहम्दुलिल्लाह सही अहादीस से साबित हैं अगर कोई मुसलमान मज़बूत अकीदें और अल्लाह की जात पर कामिल भरोसा रखकर इन दवाओं को इस्तेमाल करता है तो अल्लाह के करम से वो जादू के असर से निजात पायेगा (इंशा अल्लाह) ।

(1) शहद-शहद को बतौरे ग़िजा हमेशा इस्तेमाल करे। अल्लाह तआला ने शहद की मक्खी का जिक्र करते हुए फरमाया "इनके पेट से पीने लायक शहद निकलता है जिसके रंग मुख़तलिफ़ है और जिस में लोगों के लिए शिफ़ा है। (सूरः नहल-69)

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन चीज़ों में शिफ़ा है

1. पछना लगवाने मे (हल्का चीरा) 2. शहद पीने में 3. आग से दागने में। मैं अपनी उम्मत को दाग़ने से मना करता हूं।

(बुख़ारी किताबुत्तिब बाबुदुआ बिल्असल, जिल्द-3, सफा-310)

(2) कलोंजी-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कलौंजी में हर बीमारी की शिफ़ा है सिवाय मौत के।

(बुख़ारी किताबुत्तिब बाबुल हय्यातिस्सौदा, जिल्द-3, सफा-312)

(3) ज़मज़म-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह बरकत वाला पानी है और यह खाने वाले की ग़िज़ा है और हर बीमारी के लिए शिफ़ा है।

(बज़्ज़ार, बैहकी, तबरानी, मजमऊल ज़वाइद जिल्द-3, सफा-286)

जाबिर रजियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "ज़मज़म का पानी जिस नियत से पीया जाये अल्लाह उसको पूरा करता है।"

(इब्ने माजा किताबुल मनासिक बाबुश्शुर्ब मिन ज़मज़म जिल्द-2 सफा-657)

दूसरी हदीस में है कि नबी सल्ल. ज़मज़म का पानी मशकीज़ा और बरतन में भर लिया करते और इसको मरीज़ों को पिलाते और इनके जिस्म पर डालते।

(तिर्मिज़ी किताबुल हज, जिल्द-1, सफा-347-बैहकी जिल्द-5, सफा-202)

4. बारिश का पानी-बारिश का पानी जादू के असर को खत्म करने में बहुत मुफ़ीद (फ़ायदेमंद) है । अल्लाह रब्बुल आलमीन ने इस को मुबारक पानी से ताबीर किया है।

(सूरः क़ाफ़-9)

जिस तरह ज़मज़म का पानी जिस्म पर डाला और पीया जाता है उसी तरह बारिश का पानी भी जादू को दूर करने के लिए पिलाया जाये और जिस्म पर बहाया जाये तो निहायत मुफ़ीद (फ़ायदेमंद) साबित होगा। (इंशा अल्लाह)

5. ज़ैतुन का तेल-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि ज़ैतुन खाओ और इसको जिस्म पर लगाया करो इसलिए कि वो मुबारक दरख़्त है।

(तिर्मिज़ी अब्वाबुल अतइमह बाब फी अकलिज़्ज़ैत जिल्द-1 सफा-648)